प्रातः क्लास 30/11/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बाप को सारी दुनिया याद करती है। जब भी अल्ला लोगों के पास जाओ तो अंगुली से ऊपर के लिए इशारा करेंगे। वह है ऊँच ते ऊँच और आत्मा का परिचय भी देते हैं। बाबा ऊपर परमधाम में वा ब्रह्माण्ड में रहते हैं। बाप कहते हैं मैं ही आकर तुम बच्चों को अपना परिचय देता हूँ। मुझे देखो कितनी गाली देते हैं। यह भी ड्रामा प्लैन अनुसार करते हैं। कोई नई बात नहीं। सत्युग आदि सत् होसी सत् है भी सत्। यह सभी चक्र लगाते रहते हैं। यह बातें बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। तुम बच्चों को भी तंग करते हैं। शास्त्रों में भी कौरव और पाण्डवों की बात है ना। तो बाप कहते हैं मुझे तो गाली देते हो। फिर मैं जब यहाँ आता हूँ, जिन्हों को राजयोग सिखाता हूँ, उन्हों को भी कितना तंग करते हैं। शास्त्रों में कैसी-2 बातें बनाकर लिख दी हैं। गोपियों साथ खेल-पाल करते थे। अभी यहाँ तो सांवरा है ना। वास्तव में सांवरा कृष्ण नहीं कहेंगे। कृष्ण की वही आत्मा भिन्न-2 नाम-रूप लेते काम चिक्षा पर बैठ काली बन जाती है। तुम भी काम चिक्षा पर बैठ सांवरे हो गये हो। तुम बच्चे जानते हो शुरू में भी कितना तंग किया था। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में कितने विघ्न पड़ते हैं। पाण्डवों की लाखा भवन को आग लगाई। वह भी देखा ना। तुम्हारे महल को आग लगाने आये थे ना। लेखराज नाम से था। तो कितनी कोशिश की तंग करने की। तुम पाण्डव थे ना अन्दर। तुम्हीं पाण्डव हो। पाण्डवों को कौरव बहुत तंग करते हैं। बाप भी समझाते हैं अबलाओं पर बहुत अत्याचार होते हैं। कल्प-2 होता रहता है। कोई नई बात नहीं। यहाँ भी तुमको हैरान करते हैं। ऐसी और कोई संस्था होती नहीं जिसके पिछाड़ी इतनी खिटपिट करते हैं। अभी की ही बात है। यह सभी बातें तुम बच्चों को बाप ही समझाते हैं। वह बापों का बाप भी है, पतियों का पति भी है। वही आकर तुमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। यह रूहानी नॉलेज और कोई मनुष्य मात्र में होती नहीं। नॉलेजफुल, ज्ञान का सागर एक ही है। बाप आते ही हैं राजयोग सिखलाने। बाप कहते हैं मीठे बच्चे यह नॉलेज तुमको इस संगमयुग पर ही आकर देता हूँ। यह है भविष्य 21 जन्मों के लिए। मनुष्य तो इन बातों को जान न सके। यह राज्य तुमको 21 पीढ़ी के लिए मिलता है। तुम समझा सकते हो, इन ल॰ना॰ ने यह राज्य कैसे पाया। कहाँ वह देवताएँ, कहाँ तुम मनुष्य। तुम अभी बाप द्वारा सभी कुछ जान गये हो। किसको भी समझा सकते हो। इस संगमयुग की तो आयु ही बहुत थोड़ी है। संगमयुग कब होता है, यह भी किसको पता नहीं है। वह समझते हैं कृष्ण द्वापर में गया। तुम समझाते हो कृष्ण तो सतयुग का प्रिन्स था। इनको यह बनाने बाप संगमयुग पर ही आते हैं। उन्होंने तो कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। बाप समझाते हैं वह सभी है अज्ञान। गीता झूठी है। अभी तुम ऐसे कहेंगे तो जब तक (न) सम(झे) तब तक तो तुमको तंग करेंगे ना। तुम कहते हो भक्ति दुर्गतिमार्ग है। यह बातें सन्यासी, शंकराचार्य आदि सुने तो हैं ना और सुनते ही रहते हैं; क्योंकि खुद भी शिव की भक्ति करते हैं। बाप ने समझाया है पुजारी भक्त को कब भगवान नहीं कहा जाता। एक तरफ भक्ति करते रहते, दूसरे तरफ फिर शिवोहम् कहलाते रहते। खुद पूजते रहते और अपनी पूजा कराते रहते। बिल्कुल ही अज्ञानी मनुष्य हैं। तो बाप समझाते हैं कृष्ण को भी कितना हैरस करते थे– फलाने को भगाया, यह किया। वास्तव में यह सांवरा है। इन पर ही खिट-2 होती है। और धर्मों में इतने हैरान नहीं होते। कोई ऐसे सताते नहीं। यहाँ अपने ही भारतवासी तंग करते रहते हैं पाण्डवों को। कितनी कलंक लगाई है। कृष्ण थोड़े ही कहेंगे जुआ खेलो। फिर दिखाते हैं द्रौपदी को दाव पर लगाया। द्रौपदी को 5 पति पाण्डव दिखाई हैं। कितना यह सभी शास्त्रों में गंद लिखा है। वह तो कृष्ण को भगवान मानते हैं। भगवान ने फिर ऐसी राय दी। बातें ऐसी लिख दी हैं जो बिल्कुल ही सुनने लायक नहीं। अभी बाप यह सभी बातें समझाते हैं। यह वेद-शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। यह फिर भी भक्तिमार्ग में होंगे। अभी बाप कहते हैं तुमको यह शास्त्र आदि पढ़नी नहीं है। यह भी ड्रामा में है। भक्ति के शास्त्र हैं। फिर संगमयुग भी होगा ज़रूर।

जो कुछ पास्ट हुआ है सो फिर से रिपीट होगा। तो यह बाप बैठ समझाते हैं। क्या-2 पास्ट में हुआ है फिर तुमको भी ऐसे समझाना होता है। कई बोलते हैं तुम्हारी इतनी बदनामी क्यों होती है? यह तो पाण्डवों और कौरवों का गायन है। पाण्डवों की निन्दा हुई थी ना। पाण्डव पति कृष्ण को कहते हैं। उनकी कितनी ग्लानि की है– इतने स्त्रियों को भगाया, यह किया। भगाने वाले पर तो वॉरन्ट निकल जाये। कितनी कन्याएँ-माताएँ आती थीं। भगाया तो कोई ने नहीं। ऐसे नहीं हो सकता जो कोई के पिछाड़ी इतने सभी घर-बार छोड़ आयें। यह भी समझ चाहिए ना। क्या ताकत है अगर ताकत है तो उनका सामना कैसे करें? यह तो सर्वशाक्तिवान बाप का काम था ना। बाप खुद कहते हैं यह मेरा ही पार्ट है ना जो ड्रामा प्लैन अनुसार प्ले कर रहे हैं। तुम बच्चों को भी यह समझाना है यह कोई नई बात नहीं। यह भी लिखा हुआ है कौरव की है विनाश काले विपरीत बुद्धि। अभी देहली में मुरार जी देसाई ओपनिंग करने आवेंगे। कल यहाँ से तार भेजी है कि उनको यह बातें समझाओ। यह विनाश जो हो रहा है इस विनाश के बाद विश्व में आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होनी है, गोया विश्व में शान्ति स्थापन होनी है। उनको समझाना तो है ना। और कोई संस्था के पिछाड़ी इतने तंग नहीं करते हैं; क्योंकि यहाँ मुख्य है पवित्रता की बात। इस पर खिट–पिट शुरू से लेकर पिछाड़ी तक चलती रहेगी। बड़े-2 घर के आवेंगे तो बड़े हंगामे भी मचेंगे। बाप कहते हैं तुम बच्चों ने इस सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज अनेक बार सुनी है। बाप ही बैठ समझाते हैं– मैं कैसे स्थापना करता हूँ। वह तो हैं हठयोगी। उन्हों के भी कितने फॉलोअर्स बनते हैं। कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं। जिन्होंने गुरु किया होगा, अनुभवी होंगे। अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखलाते हैं। यह भी शास्त्र आदि तो पढ़ा हुआ है ना। अभी इनको भी बाप कहते हैं यह शास्त्रों का भूसा सारा बुद्धि से निकालो। तुम्हारा कितना सामना करते हैं, शास्त्रों में यह है। बाप समझाते हैं यह सभी भक्तिमार्ग के शास्त्र आदि हैं। मैं इनसे मिलता नहीं हूँ। यह सभी ईविल्स हैं। हियर नो ईविल..... तुम यह कुछ भी न सुनो। जो मैं तुमको सुनाता हूँ वही सुनो। बाकी वह तो सभी हैं भक्तिमार्ग के। भक्ति-मार्ग की संस्थाएँ तो अनेक हैं। किस्म-2 के आते हैं। बहुत बातें बनाते भी हैं। कितना तंग करते हैं। यह भी कोई नई बात नहीं है ना। सिर्फ तुमको बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटें। यही मेहनत है। माया तुमसे खूब अच्छी रीत लड़ती है। बाप को याद करते-2 जब कर्मातीत अवस्था हो जावेगी फिर तुमको कोई तकलीफ नहीं होगी। खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। शरीर भी जैसे हल्का हो जावेगा। जैसे कलोफार्म(क्लॉरोफ़ॉर्म) लगता है तो भां-2 हो गुम हो जाते हैं। यह भी बाप की याद में रहते-2 जैसे तुम यहाँ शिवबाबा की याद में बैठे रहते हो तो बैठते-2 तुम्हारी रस्सी खैंची जाती है। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बाबा कुछ करते नहीं हैं। ड्रामा में पार्ट है आत्मा की रस्सी खैंची जाती है। सा॰ में चले जाते हैं। भां-2 होते-2 मनुष्य शांत हो जाते हैं ना। यह भी ऐसे होता है। भां-2 होते-2 फिर चले जाते हो ध्यान में। कितनी बच्चियाँ जाती थीं। फिर आ जाती थीं। छोटी-2 बच्चियों की भी रस्सी बैठे-2 आपे ही खैंची जाती थी। आपे ही आपस में बैठते थे और वैकुण्ठ में जाकर डांस आदि करने लग पड़ती थीं। बाबा कहते थे यह भी ड्रामा में नूँध है। मैं तो कुछ भी करता नहीं हूँ। हैरस(तंग) भी इनको करते हैं। नहीं तो यह बिजनेस में था, कब कोई हैरस कर न सके। कहते हैं ना रास्ते चलते ब्राह्मण फँसा। नहीं तो कब कोई की गाली नहीं खाई, और ही नवाब कहते थे। शाम को 5 लगा यह मोटर में गया मैच घूमने-फिरने। धंधा खलास। जास्ती हवस नहीं होती थी। टाइम पर गये, एक/दो अच्छे ग्राहक मिला, बहुत हुआ। बाबा को कुछ भी मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। कितना नामाचार था। कितना रिगार्ड रखते थे। पंचायत में भी बहुत रिगार्ड से मंगाया था। थोड़ी खिट-2 करते थे, हमने कहा चुप करो। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। जो काम को जीतेंगे वह जगतजीत बनेंगे। यह मंत्र तुमको भी देता हूँ। भगवानुवाच है। अभी भगवान की मत मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। मैं कैसे कहूँगा कि विकार दो। इनमें बाबा था ना। कोई की ताकत नहीं जो कुछ कर सके।

अभी तुमको कितना तंग करते हैं। और कोई धर्म में यह बातें नहीं। अहमदाबाद में एक साधु निकला था ना, जो कहता था मैं न खाता, न पीता हूँ..... ऐसे तो हो न सके जो खाने-पीने बिगर कोई चल सके। बाबा ने लिख दिया उनकी पूरी जाँच करो। फिर बरोबर पकड़ा गया। ऐसे-2 फिर भाग जाते हैं। तो इस समय हैं अनेक मनुष्य। झूठ तो बहुत है। बच्चे जानते हैं सच की बेड़ी लुडे-2 पर बुड़े नहीं। कितने हंगामे करते हैं, समझते हैं यह संस्था अभी गई कि गई; परन्तु तुम्हारा तो नाम बढ़ता जाता है। कितने बड़े-2 म्युज़ियम खर्चा से खोलते रहते हो। तार भी कितनी अच्छी दी है। बाबा ने लिखा है तार बड़े-2 अक्षरों में बोर्ड पर लगा दो वा छपाकर बाँटो। माउण्ट आबू हेड ऑफिस से ऐसे वरशन्र्स आये हैं। स्प्रीचुअल नॉलेज सिवाय बाप के कोई जानते ही नहीं। उनको भी समझाओ, अभी भगवान बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें और तुम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। यह जो लड़ाई लग रही है इससे ही विश्व में शान्ति होनी है। बापू जी भी रामराज्य ही मांगते थे ना। अभी तो वह हैं नहीं। तुम बच्चों को कितना समझाया जाता है, औरों को समझाने लिए फिर कितने चित्र आदि बनते हैं। बाबा तो कहते रहते हैं बड़े-2 चित्र बनाओ, जो दूर से ही दिखाई पड़ें। बड़े-2 स्टेशन पर, ऐरोड्रम पर लगाओ, जो कोई भी पढ़ सके। इसमें यह ज़रूर लिखा हुआ हो तुम्हारा यह ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है। भगवानुवाच, मुझे याद करने से तुम यह बन जावेंगे; परन्तु काम तो आस्ते2 होगा ना। बच्चों को डायरैक्शन मिलते रहते हैं। पूछते हैं, इतना खर्चा कहाँ से आया? बोलो, खर्चा तो हम बच्चे ही करते हैं। हम श्रीमत पर अपने लिए राजधानी स्थापन करते हैं। हम ब्राह्मण तो बहुत हैं। सभी कोई गरीब थोड़े ही हैं। हम ईश्वरीय सम्पद्राय हैं। क्या ईश्वरीय सम्प्रदाय पास पैसे नहीं होंगे। कोई कितना देते हैं, कोई कितना देते हैं। कोई से भी मांगने की दरकार नहीं रहती। जिन-2 को वहाँ ऊँच पद पाना है वह आपे ही मददगार बनते हैं। अपनी राजधानी पाने लिए क्या यह भी खर्चा नहीं करेंगे, जबकि हम विश्व के मालिक बनते (हैं।) ...हाँ ...ो है ..... की बात। कितना अच्छी रीत समझाना पड़ता है। म्युज़ियम में एम॰पी॰ आदि आते हैं, फिर कहते हैं हमारे घर में आकर समझाओ। बच्चे कहते हैं अच्छा, वहाँ भी आकर कोर्स तुमको देंगे। विश्व के कल्याण लिए तुम बच्चों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है, कितना समझाना पड़ता है। बाप कहते हैं शिवबाबा को याद करो; परन्तु इसमें माया की कितनी विघ्न पड़ती है। कितना समझाना पड़ता है। बाप कहते हैं शिवबाबा को याद करो; परन्तु इसमें माया की कितनी विघ्न पड़ती है। तुम बाप को याद करो। माया भुला देगी। अभी तो कोई कर्माती(त) अवस्था को नहीं पहुँचा है। वह तब होगा जब ज्ञान पूरा होगा और लड़ाई शुरू होगी। बाप कितना सहज समझाते हैं। सिर्फ अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो, तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे, बैटरी चार्ज हो जावेगी। तुम स्वदर्शन चक्र को याद करो तो देवता बन जावेंगे। बाप कहते हैं कर्मातीत बनेंगे ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो खुद भी फ़ील करते हैं बरोबर माया बिल्ली हमारा दीवा बुझा देती है। बाबा तो कहते हैं और भी अच्छी रीत उनको विघ्न में डालो। देखते हैं महावीर पहलवान हैं : महावीर हनुमान की बात भी इस समय की है ना। जो मजबूत हैं वह तो कहेंगे, माया भल कितना भी हिलावें हम हिल नहीं सकते। शास्त्रों में कितनी कथाएँ लिख दी हैं। बाप रोज़-2 भिन्न रीति समझाते रहते हैं। कहाँ कौरव गवर्नमेन्ट, कहाँ पाण्डव गवर्नमेन्ट है! हैं दोनों ताज रहित। यह पाण्डव गवर्नमेंट होने वाले हैं। वह खत्म हो जानी है। यह दैवी गवर्नमेंट स्थापन हो रही है। यह बातें कब कोई की बुद्धि में बैठ न सके। गीता का कितना प्रभाव है। बाप ने तो साफ कहा है, साधुओं का भी उद्धार करने मुझे आना पड़ता है। बाप द्वारा ही सभी का उद्धार होना है। सभी मुक्तिधाम चले जावेंगे। शास्त्रों की बातें बुद्धि में बैठी हुई हैं तो वही निकलता रहता है। बाप समझाते हैं वह सभी हैं ईविल बातें जिससे तुम सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। फिर भी तुम यह पढ़ेंगे। तुम ही सभी से जास्ती भक्ति करने वाले हो। अबलाओं पर कितनी विघ्न पड़ती है। द्रौपदी ने भी पुकारा ना हमको नगन करते हैं। कहानियाँ कैसे-2 गंदी बैठ बनाई है। अभी तो इन बातों से जैसे घृणा आती है। अभी बाप कहते हैं चलते-फिरते सिर्फ मन्मनाभव हो रहो। याद से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। पवित्र भी रहना है। दैवीगुण धारण करनी है। इसलिए बाबा ने कहा है अपना चार्ट आप ही देखो– कोई आसुरी गुण तो नहीं। बड़ा खबरदार रहना है। ओम।